B.A. II (Subsidiary) History

भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों का आगमन के कारण — Rajiv Nayan

1. भौगोलिक खोज
2. पुनर्जागरण का प्रभाव
3. कुतुबनुमा का आविष्कार

हेनरी (पुर्तगाली शासक 1418-1460) Henry the Navigator (1393-1460)

भारत में यूरोपीय जातियों का आगमन 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ। ये विदेशी जातियाँ भारत कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आयीं। निःसंदेह व्यापारिक हितों की सुरक्षा एक प्रधान कारण था, परन्तु इसके साथ ही अन्य उद्देश्य भी थे। इन उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की पूर्ति के लिए ही यूरोपियनों ने भारत से अपना संपर्क बढ़ाया। ये कारण निम्नलिखित हैं -

(1) आर्थिक हितों की सुरक्षा - यूरोपीय जातियों के भारत-आगमन का प्रमुख उद्देश्य अपने हितों की सुरक्षा का था। भारत से सीधा व्यापारिक संबंध कायम कर यूरोपीय जातियाँ अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करना चाहती थीं। प्राचीन काल में भी यूरोपीय देशों का भारत के साथ व्यापारिक संबंध था। इस संबंध से उन्हें बहुत अधिक लाभ होते थे। बाद में जब अरबों ने इस व्यापार पर अधिकार कर लिया तो उनको आर्थिक क्षति होने लगी। फलतः वे भारत से सीधा व्यापारिक संबंध स्थापित कर अपनी स्थिति सुदृढ़ करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर

1453 ई० में कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार

1486-1487 ई० में पुर्तगाली नाविक बार्थोलोमियो डियाज अफ्रीका के दक्षिण तट पर पहुँचा, जहाँ उसे भीषण तूफानों का सामना करना पड़ा, अतः उसने इस अन्तरीप का नाम 'cape of storms' (तूफानों का अंतरीप) रखा, पुर्तगाली शासक ने इसका नाम Cape of Good Hope रखा। (कुमारी आशा अन्तरीप)

यूरोपियनों ने प्रारंभ में भारतीय शासकों के सामने नतमस्तक होकर, वफादारी की कसम खाकर अपने-अपने लिए व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त की तथा अपनी-अपनी कोठियाँ स्थापित की। ऐसा कर के अपने व्यापार को अधिक-से अधिक बढ़ाना चाहती थी। इस प्रयास में विभिन्न जातियों में स्पर्द्धा भी होती थी। [1608 ई० में कैप्टन हॉकिन्स : जेम्स प्रथम का पत्र लेकर जहाँगीर के दरबार में गया था।]

17 मई 1498 ई० वास्को डि गामा Cape of Good Hope का चक्कर लगाकर कालीकट के निकट कप्पकडावु पहुँचा (60 गुना ज्यादा कीमत पर बिका)

(2) राजनीतिक उद्देश्य - आर्थिक हितों की सुरक्षा की आड़ में विदेशी जातियाँ अपने राजनीतिक हितों की सुरक्षा में भी लगी हुई थीं। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही भारत की राजनीतिक स्थिति के असंतुलित होने के लक्षण स्पष्ट होने लगे थे। मुगल साम्राज्य धीरे-धीरे पतन की तरफ अग्रसर हो रहा था। इसका लाभ उठाकर एक तरफ तो स्थानीय तत्व एवं शक्तियाँ अपने-आपको मजबूत करने में लगी हुई थीं तो दूसरी तरफ यूरोपीय जातियाँ भी इस मौके का लाभ उठाना चाहती थीं। 18वीं शताब्दी के प्रारंभिक

17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही मुगल साम्राज्य के पतन के लक्षण प्रगट होने लगे थी

Scanned by CamScanner

18वीं सदी के प्रारंभिक चरण तक भारत में पुर्तगाली, डच, अंग्रेज और फ्रांसीसी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित हो चुकी थीं। इनके समक्ष भारतीय राजनीति का खोखलापन स्पष्ट हो चुका था। अतः ये कम्पनियाँ व्यापार की आड़ में राजनीति में प्रवेश कर अपने-अपने हितों की सुरक्षा एवं सर्वोच्चता प्राप्त करने का प्रयास करने लगीं। इस दिशा में पहल पुर्तगालियों ने आरंभ की। उन लोगों ने 'सशस्त्र व्यापार' करने की नीति अपनाई तथा सेना को प्रशिक्षित करना प्रारंभ किया, परन्तु पुर्तगाली भारत में राजनीतिक सर्वोच्चता प्राप्त करने के प्रयास में अनेक कारणों से पिछड़ गये। यही स्थिति डचों की भी रही, लेकिन अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति हेतु भारतीय राजनीति खुला हिस्सा लेना प्रारंभ कर दिया। फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने दक्षिण की राजनीति में गहरी दिलचस्पी लेना प्रारंभ कर दिया। दूसरी तरफ अंग्रेज बंगाल पर अपनी निगाहें जमाए हुए थे। आपसी स्वार्थों की टकराहट ने अंग्रेजों और फ्रांसीसियों में सर्वोच्चता

(हाशिये पर:) 18वीं सदी के प्रारंभिक चरण तक भारत में पुर्तगाली, डच, अंग्रेज एवं फ्रांसीसी व्यापारिक कंपनियाँ स्थापित हो चुकी थीं। पुर्तगालियों द्वारा प्रतिस्पर्धा की पहल एवं 'सशस्त्र व्यापार की नीति' का अवलम्बन एवं सेना को प्रशिक्षण देना। लेकिन कालांतर में पिछड़ गये।

के संघर्ष को भी जन्म दिया। इस संघर्ष में अंग्रेजों को ही विजयश्री हासिल हुई और वे समूचे भारत के मालिक बन बैठे।

(3) धार्मिक उद्देश्य - व्यापारिक एवं राजनीतिक उद्देश्यों के अतिरिक्त यूरोपीय जातियाँ असभ्य देशों को सभ्य बनाने की आड़ में भी भारत में अपनी शक्ति कायम करना चाहती थीं। यूरोपीय जातियों की धारणा थी कि असभ्यों को सभ्य बनाना उनका उत्तरदायित्व (Whiteman's burden) है। इसके लिए ईसाई धर्म का प्रचार आवश्यक था। अरबों की तरह यूरोपीय जातियाँ भी अपने धर्म का प्रचार करना अपना पवित्र कर्तव्य मानती थीं, लेकिन जहाँ अरबों ने धर्म-प्रचार के लिए सैनिक अभियानों का सहारा लिया, वहाँ यूरोपीय जातियों ने उदारवादी दृष्टिकोण अपनाया। ऐसा कर वे भारतीयों के मध्य अपने लिए स्थान बनाना चाहती थीं। अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने धार्मिक मामलों में उदारवादी दृष्टिकोण का सहारा लिया।

Rudyard Kippling — White men's Burden (असभ्यों को सभ्य बनाना उनका दायित्व है)

Scanned by CamScanner

पुर्तगाली गवर्नर मार्टिन अल्फांसो के साथ संत फ्रांसिस्को जेवियर भारत आया था।

धर्म-प्रचार का काम ईसाई मिशनरियों को सौंप दिया गया। इसके विपरीत पुर्तगालियों ने धर्म-प्रचार के लिए कठोर एवं दमनात्मक कार्रवाई की जो अन्ततः उनके पतन का एक प्रमुख कारण सिद्ध हुई।

इस प्रकार भारत में यूरोपियनों का आगमन आकस्मिक एवं निरुद्देश्य नहीं था। वे निश्चित आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक उद्देश्य लेकर भारत आए थे। यूरोप की राजनीति ने भी उनके प्रयासों में सहायता पहुँचाई।

प्रथम चरण - सशस्त्र व्यापार की नीति (1498 - 1505 ई०)

द्वितीय चरण - नीले पानी की नीति (डी० अल्मेडा) (1505 - 1509 ई०)

तृतीय चरण - साम्राज्यवादी नीति (1509 ई० - 17वीं शताब्दी के प्रथम चरण तक)

अल्बुकर्क (1509-15)

नीनो-द-कुन्हा

लोपोसारस